



पाक्षिक

# परोपकारिणी



महर्षि दयानन्द सरस्वती  
संग्रहालय





वर्ष : ६१ अंक : १०

दयानन्दाब्द : १९५

विक्रम संवत् : वैशाख शुक्ल २०७६

कलि संवत् : ५१२०

सृष्टि संवत् : १,९६,०८,५३,१२०

सम्पादक

डॉ. सुरेन्द्र कुमार

प्रकाशक-परोपकारिणी सभा,

केसरगंज, अजमेर- ३०५००१

दूरभाष : ०१४५-२४६०१६४

मुद्रक-श्री मोहनलाल तँवर

वैदिक यन्त्रालय, अजमेर।

दूरभाष : ०१४५-२४६०८३१

परोपकारी का शुल्क

भारत में

एक वर्ष-३०० रु.

पाँच वर्ष-१२०० रु.

आजीवन -३००० रु.

एक प्रति - १५/- रु.

विदेश में

वार्षिक-५० यू.के. पाउण्ड/८० यू.एस.डॉलर

द्विवार्षिक-९५ पाउण्ड/१५२ डॉलर

त्रिवार्षिक-१४० पाउण्ड/२२५ डॉलर

आजीवन (१५वर्ष)-५००पा./८०० डॉ.

एक प्रति - ३ पाउण्ड

एक प्रति - ४ डॉलर

वैदिक पुस्तकालय : ०१४५-२४६०१२०

ऋषि उद्यान : ०१४५-२६२१२७०

RNI. No. ३९५९ / ५९

# परोपकारी

मई द्वितीय २०१९

## अनुक्रम

०१. ऋषि दयानन्द के ग्रन्थों की रक्षा...	सम्पादकीय	०४
०२. मृत्यु सूक्त-२९	डॉ. धर्मवीर	०७
०३. कुछ तड़प-कुछ झड़प	प्रा. राजेन्द्र 'जिज्ञासु'	१०
०४. महर्षि दयानन्द के वेद-भाष्य....	स्वामी सत्यप्रकाश	१२
०५. हैदराबाद मुक्ति संग्राम - एक....	अपर्णा शुक्ल	१४
०६. निर्वाचन से चयन की ओर	अमृत मुनि	२०
०७. वर्तमान परिपेक्ष में वेदप्रचार कार्य...	सुनिती छेत्री	२२
०८. शङ्का समाधान- ४८	डॉ. वेदपाल	२६
०९. यज्ञ के आरम्भ में शुद्धिप्रकरण	सज्जय मोहन मित्तल	२७
१०. महर्षि दयानन्द का वास्तविक....	शिवनारायण उपाध्याय	२८
११. संस्था की ओर से...		३०

www.paropkarinisabha.com

email : psabhaa@gmail.com

उपनिषद्, दर्शन, प्रवचन आदि सुनने हेतु बटन दबाएं

www.paropkarinisabha.com→gallery→videos

'परोपकारी' पत्रिका में प्रकाशित सभी आलेखों में व्यक्त विचार लेखकों के निजी हैं। इन्हें सम्पादकीय नीति नहीं समझा जाये।  
किसी भी विवाद की परिस्थिति में न्यायक्षेत्र अजमेर ही होगा।



# यज्ञ के आरम्भ में शुद्धिप्रकरण

सञ्जय मोहन मित्तल

ब्रह्मयज्ञ व देवयज्ञ का आरम्भ हम आचमन और अंगस्पर्श आदि शुद्धि प्रकरणों से करते हैं। इन विधियों से हमारी प्राचीनकाल से ही शुद्ध रहने की परम्पराओं की पुष्टि होती है। हमारे ऋषियों ने इन विधियों का उल्लेख कर जीवन में शुद्धि के महत्व को इंगित किया है। परन्तु क्या यह शुद्धि केवल भौतिक मात्र है या इसका कोई आत्मिक अर्थ भी है? जल शोधक है यह सर्वविदित है। जितना अधिक शुद्ध जल पियेंगे उतने ही हमारे शरीर के आन्तरिक अंग शुद्ध रहेंगे। वैसे ही नित्यप्रति शुद्ध शीतल जल से स्नान करने से शरीर में स्वच्छता बनी रहेगी, परन्तु स्नान के उपरान्त यज्ञ वेदि पर बैठते ही पुनः शुद्धि करने का क्या प्रयोजन है?

यह शुद्धि मात्र सांकेतिक रूप में भौतिक है, क्योंकि इसका प्रयोजन तो कुछ और ही है और वह है विचारों और कर्मों की शुद्धि। आन्तरिक शुद्धि के लिए जल से आचमन करते हुए हम अपने ध्यान को परमपिता परमात्मा पर केन्द्रित करते हुए विचारों को शुद्ध करने का प्रयत्न कर रहे हैं। हम प्रार्थना कर रहे हैं कि हमारे मन में केवल धर्म के अनुकूल विचार ही जन्म लें और निवास करें, केवल ऐसे विचार जो सर्वहितकारी हों; बुरा या विनाशकारी विचार हमारे पास भी न फटकने पाए। ईश्वर से प्रार्थना कर रहे हैं कि हमें ऐसे गुण प्रदान करे जिनसे हमें न्यायोचित ज्ञान, धन और यश की प्राप्ति हो।

वैसे ही बाहरी शुद्धि के लिए अंगस्पर्श के दौरान, अपने अंगों में ओज बने रहने की प्रार्थना करते हुए हम अपने कर्मों को शुद्ध रखने का वचन भी दे रहे हैं। हम वचन दे रहे हैं कि अपनी वाणी का प्रयोग केवल सत्य और हितकारी वचनों को बोलने में करेंगे; कभी भूल से भी पर-निन्दा या स्वयं की निन्दा न करेंगे। किसी की

आलोचना भी इसी नियम को ध्यान में रखकर करेंगे। किसी को नीचा दिखाने के प्रयोजन से की गई आलोचना से दूर रहेंगे। इसी इन्द्रिय से किए गए खान-पान को भी शुद्ध सात्विक रखेंगे।

“तेन त्यक्तेन भुञ्जीथा” यजुर्वेद ४०.१

वाक्य का पालन करेंगे। अपनी श्वास को शुद्ध रखेंगे; उसे किसी भी प्रकार से धूम्र आदि के प्रदूषण से मुक्त रखेंगे। अपने नेत्रों का प्रयोग अच्छाइयाँ देखने के लिए करेंगे न कि बुराइयों की खोज में। अपने कानों का प्रयोग अच्छा सुनने के लिए ही करेंगे; परनिन्दा रसास्वादन से दूर रहेंगे। अपने हाथों का प्रयोग केवल धर्मोचित कर्मों के लिए करेंगे। अपने पैरों का प्रयोग केवल उसी जगह जाने के लिए करेंगे जहाँ जाना उचित है; अनुचित जगहों से दूर रहेंगे। और जो भी कर्म हम अपने किसी भी अंग द्वारा करेंगे वह वैदिक धर्म के अनुकूल ही होगा।

यज्ञ के आरम्भ में ही इन शुद्धि-प्रकरणों में यज्ञ के प्रयोजन को रेखांकित कर दिया गया है। इसके बाद आने वाले सारे प्रकरण जैसे स्तुति-उपासना, स्वस्तिवाचन, शान्तिकरण, अग्निहोत्र आदि इसी भाव को और गहराई में लेकर जाते हैं। स्वार्थ से ऊपर उठ अपने सारे कार्य सर्वहित में करना ही गीता का भी मूल संदेश है। यज्ञ ईश्वर प्रप्ति की सीढ़ी का पहली पायदान है। यज्ञ का महत्व केवल इतना ही है कि यह हमें धर्म मार्ग से भटकने से बचाता है। परन्तु ईश्वर की सच्ची उपासना तो केवल अच्छे कर्म करने में ही है। यज्ञ के उपरान्त स्वार्थवश कार्य करने से यज्ञ का पुण्य नष्ट हो जाता है। सब कर्म अच्छे हों तो “व्यशेमहि देवहितं यदायुः” यजुर्वेद २५.२१ को चरितार्थ करते हुए पूरा जीवन ही भक्तिमय हो जायेगा।

न्यूजर्सी (अमेरिका)

## उन्नति का कारण सत्योपदेश

जिससे मनुष्य जाति की उन्नति और उपकार हो, सत्यासत्य को मनुष्य लोग जानकर सत्य का ग्रहण और असत्य का परित्याग करें क्योंकि सत्योपदेश के बिना अन्य कोई भी मनुष्य जाति की उन्नति का कारण नहीं है। (स. प्र. ३)